B.A - Part - I Social Psychology.
(Sub)

Q :- संवेदना और प्रत्यक्षीकरण में अन्तर स्पष्ट करें ?

Ans :- प्रत्यक्षीकरण एक सामाजिक एवं जटिल मानसिक प्रक्रिया है। प्रत्यक्षीकरण विश्व की बाहरी वस्तुओं से ही संबंधित होता है। बाहरी वस्तुएँ हमारी ज्ञानेन्द्रियों को उत्तेजित करती है तथा उत्तेजनाओं के फलस्वरूप हमारे मस्तिष्क में संवेदनाएँ उत्पन्न होती है। हमारा मस्तिष्क अपने विगत अनुभव के आधार पर ही किसी संवेदना को अभीष्ट नाम देता है, अर्थात उसे पहचानता है। यही वास्तविक प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया है। संवेदनशीलता एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें वस्तु को जानना आवश्यक नहीं है जबकि प्रत्यक्षीकरण भौतिक वस्तु का प्रत्यक्ष या अपरोक्ष ज्ञान कराने वाली जटिल क्रिया है जिसमें वस्तु के परिचय के साथ ही उसके विषय में ज्ञान भी होता है। हमारा मस्तिष्क संवेदनाओं को ग्रहण करके एक स्पष्ट अर्थ देता है। मस्तिष्क के द्वारा संवेदनाओं को प्रदान किया जाने वाला यह सुनिश्चित अर्थ ही प्रत्यक्षीकरण कहलाता है। इसे निम्नांकित रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है -

उद्दीपक ⟶ ज्ञानेन्द्रियाँ ⟶ प्रत्यक्षीकरण
उत्तेजनाएँ   संवेदनाएँ

Scanned by TapScanner

ड्रेगनर के शब्दों में ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा बाह्य वस्तुओं और घटनाओं के ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया ही प्रत्यक्षीकरण है।"

मैक्डूगल के अनुसार, आधुनिक युग के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मैक्डूगल ने प्रत्यक्षीकरण की एक व्यवस्थित परिभाषा इन शब्दों में प्रस्तुत की है, उपस्थित वस्तुओं के विषय में सोचना ही प्रत्यक्षीकरण कहा है। एक वस्तु तभी उपस्थित कही जाती है जब तक कि इससे आने वाली शक्ति हमारी ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करती रहती है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि मूलभूत रूप से प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया का प्रारम्भ होना किसी बाहरी उत्तेजक पर निर्भर करता है।

Dr. Randhir Kumar
Dept. of Psychology
U.R.C. Rosera, Samastipur
9570435954

Scanned by TapScanner